बीमारों के लिए 25 उपचार

रिसाले-ए-नूर संग्रह से

मानवता का ईश्वरीय मुठभेड़ श्रृंखला

25

बीमारों के लिए उपचार

* पच्चीसवीं झलक

बेदिउज्जमां
नर्स ने कहा

TUGHRA
BOOKS
न्यू जर्सी

कॉपीराइट © 2009 तुघरा बुक्स द्वारा

12 11 10 09 1 2 3 4

सभी अधिकार सुरक्षित हैं। इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली द्वारा प्रकाशक से लिखित अनुमति के बिना पुन: प्रस्तुत या प्रेषित नहीं किया जा सकता है।

तुग़रा बुक्स द्वारा प्रकाशित
26 वर्ल्ड्स फेयर डॉ. यूनिट सी

समरसेट, न्यू जर्सी, 08873, संयुक्त राज्य अमेरिका

www.tughrabooks.com

हुसेन अकारसु द्वारा तुर्की से अनुवादित

आईएसबीएन: 978-1-59784-218-1

द्वारा मुद्रित
Çaglayan A.Ş., इज़मिर - तुर्की

विषयसूची

बेदिउज्जमां और रिसाले-ए नूर iii

बीमार लोगों के लिए पच्चीस उपचार

[द ग्लेम्स, द ट्वेंटी-फिफ्थ ग्लेम्स से]

एक अनुस्मारक और एक माफ़ी 1

पहला उपाय 2

दूसरा उपाय 2

तीसरा उपाय 3

चौथा उपाय 4

पांचवा उपाय 6

छठा उपाय 7

एक और छठा उपाय 8

सातवां उपाय 9

आठवां उपाय 10

नौवां उपाय 12

दसवां उपाय 13

ग्यारहवां उपाय 14

बारहवां उपाय 15

तेरहवां उपाय 16

चौदहवाँ उपाय 18

पन्द्रहवां उपाय 20

सोलहवां उपाय 22

सत्रहवाँ उपाय 23

अठारहवाँ उपाय 25

उन्नीसवां उपाय 27

बीसवां उपाय 30

इक्कीसवाँ उपाय 32

बाईसवां उपाय 33

तेईसवां उपाय 34

चौबीसवां उपाय 35

पच्चीसवां उपाय 37

सूची 39

बेदिउज्जमां और रिसाले-ए नूर

अपने जीवनकाल की उपलब्धियों के कई आयामों के साथ-साथ अपने व्यक्तित्व और चरित्र में, बेदीउज्जमां (1877-1960) मुस्लिम दुनिया में एक महत्वपूर्ण विचारक और लेखक थे और अपने निरंतर प्रभाव के माध्यम से, आज भी हैं। उन्होंने इस्लाम की बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों को सबसे प्रभावी और गहन तरीके से प्रस्तुत किया, जो चौदहवीं शताब्दी के इतिहास में विभिन्न स्तरों पर स्पष्ट है। वे अस्सी-पांच साल तक जीवित रहे। उन्होंने लगभग सभी वर्ष इस्लाम के लिए प्रेम और जोश से भरे हुए, एक बुद्धिमान और संतुलित सक्रियता में बिताए, जो कि ठोस तर्क पर आधारित थी और कुरान और पैगंबर के उदाहरण की छाया में थी।

बेदीउज़्ज़मान उस दौर में रहते थे जब भौतिकवाद अपने चरम पर था और बहुत से लोग साम्यवाद के पीछे पागल थे, और दुनिया बहुत बड़े संकट में थी। उस महत्वपूर्ण दौर में, बेदीउज़्ज़मान ने लोगों को विश्वास के स्रोत की ओर इशारा किया और उनमें सामूहिक बहाली की प्रबल आशा जगाई।

ऐसे समय में जब विज्ञान और दर्शन का प्रयोग युवा पीढ़ी को नास्तिकता की ओर गुमराह करने के लिए किया जा रहा था, तथा शून्यवादी दृष्टिकोण का व्यापक प्रभाव था, ऐसे समय में जब यह सब सभ्यता, आधुनिकीकरण और समकालीन सोच के नाम पर किया जा रहा था और जो लोग इनका विरोध करने की कोशिश करते थे, उन्हें क्रूरतम उत्पीड़न का सामना करना पड़ता था, बेदिउज्जमां ने सम्पूर्ण लोगों के समग्र पुनरुत्थान के लिए प्रयास किया, तथा उनके मन और आत्मा में आधुनिक और पारंपरिक शिक्षा तथा आध्यात्मिक प्रशिक्षण के संस्थानों में जो कुछ भी सिखाया जाता था, उसे फूंक दिया।

बेदिउज़्ज़मान ने देखा था कि आधुनिक अविश्वास विज्ञान और दर्शन से उत्पन्न हुआ है, न कि पहले की तरह अज्ञानता से। उन्होंने लिखा कि प्रकृति ईश्वरीय शक्तियों का संग्रह है।

संकेत और इसलिए विज्ञान और धर्म परस्पर विरोधी विषय नहीं हो सकते। बल्कि, वे एक ही सत्य की दो (स्पष्टतः) भिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं। मन को विज्ञान से प्रकाशित किया जाना चाहिए, जबकि हृदय को धर्म से प्रकाशित किया जाना चाहिए।

बेदीउज्जमां शब्द के सामान्य अर्थ में लेखक नहीं थे। उन्होंने अपनी शानदार रचना रिसाले-ए-नूर लिखी, जो 5,000 पृष्ठों से अधिक का संग्रह है, क्योंकि उनका एक मिशन था: उन्होंने विज्ञान और दर्शन द्वारा पोषित विचारों की भौतिकवादी और नास्तिक प्रवृत्तियों के खिलाफ संघर्ष किया और इस्लाम की सच्चाई को हर स्तर की समझ वाले आधुनिक दिमाग और दिलों के सामने पेश करने की कोशिश की। रिसाले-ए-नूर, कुरान की एक आधुनिक टिप्पणी है, जो मुख्य रूप से ईश्वर के अस्तित्व और एकता, पुनरुत्थान, पैगंबर, मुख्य रूप से कुरान सहित ईश्वरीय शास्त्रों, अस्तित्व के अदृश्य क्षेत्रों, ईश्वरीय नियति और मानवता की स्वतंत्र इच्छा, पूजा, मानव जीवन में न्याय और सृष्टि के बीच मानवता के स्थान और कर्तव्य पर केंद्रित है।

लोगों के मन और दिल से झूठे विश्वासों और अवधारणाओं के जमा हुए 'अवसाद' को हटाने और उन्हें बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से शुद्ध करने के लिए, बे-दीउज्जमान जोरदार तरीके से लिखते हैं और दोहराते हैं। वह न तो अकादमिक और न ही उपदेशात्मक तरीके से लिखते हैं; बल्कि वह भावनाओं से अपील करते हैं और लोगों के दिल और दिमाग में अपने विचारों और विचारों को उंडेलने का लक्ष्य रखते हैं ताकि उन्हें विश्वास और दृढ़ विश्वास के लिए जागृत किया जा सके।

इस पुस्तक में रिसाले-ए-नूर संग्रह से चयनित अनुभाग शामिल हैं ।

बीमार लोगों के लिए पच्चीस उपचार

[द ग्लेम्स, द ट्वेंटी-फिफ्थ ग्लेम्स से]

यह ग्रंथ औषधि, सांत्वना, आध्यात्मिक नुस्खा तथा बीमार लोगों के स्वास्थ्य लाभ की कामना के लिए लिखा गया था।

एक अनुस्मारक और एक माफ़ी

यह आध्यात्मिक नुस्खा, जो बहुत तेज़ी से लिखा गया था, संशोधित नहीं किया गया है और इसे वैसे ही छोड़ दिया गया है जैसा कि मेरे दिल में आया। इसलिए, मैं पाठकों से, और विशेष रूप से अस्वस्थ लोगों से, अनुरोध करता हूं कि वे इसमें निहित किसी भी अप्रिय अभिव्यक्ति से आहत न हों। मैं उनसे मेरे लिए प्रार्थना करने का भी अनुरोध करता हूं।

वे लोग हैं जो जब कोई मुसीबत आ पड़ती है तो कहते हैं कि हम अल्लाह ही के हैं और हमें उसी की ओर लौटकर जाना है। (2:156)

“और वही है जो मुझे खाना-पीना देता है और जब मैं बीमार पड़ता हूँ तो मुझे शिफ़ा देता है।” (26:79-80)

इस पुस्तक में हम उन पच्चीस उपायों के बारे में बता रहे हैं जो बीमार या दुर्भाग्य से पीड़ित लोगों को सच्ची सांत्वना दे सकते हैं, जो मानव जाति का दसवां हिस्सा हैं।

पहला उपाय

तुम जो अपनी बीमारी से दुखी हो! चिंता मत करो, बल्कि धैर्य रखो। तुम्हारी बीमारी तुम्हारे लिए नुकसान नहीं है, बल्कि एक लाभ है, एक तरह का इलाज है। क्योंकि जीवन पूंजी की तरह चला जाता है। अगर यह कोई फल नहीं देता है, तो यह बर्बाद हो जाता है। और अगर यह आराम और लापरवाही में बीत जाता है, तो यह छोटा होता है, लगभग कोई लाभ नहीं देता है।

बीमारी के कारण आपकी पूंजी भारी मुनाफा कमा सकती है।

इसके अलावा, यह आपके जीवन को छोटा होने से रोकता है; यह इसे वापस रखता है, इसे लंबा या फैलाता है, ताकि यह अपने फल देने के बाद विदा हो जाए। इस तथ्य को इंगित करते हुए कि बीमारी के माध्यम से जीवन लंबा होता है, यह कहावत बहुत प्रसिद्ध है और व्यापक रूप से प्रचलित है: "विपत्ति का समय बहुत लंबा है; आनंद का समय, बहुत छोटा है।"

दूसरा उपाय

हे बीमार और धीरज की कमी वाले! निश्चय ही धीरज रखो और धन्यवाद दो। तुम्हारी बीमारी तुम्हारी बीमारी में बीतने वाले जीवन के प्रत्येक मिनट को एक घंटे की पूजा में बदल सकती है। क्योंकि पूजा दो प्रकार की होती है। एक वह जो की जाती है, दूसरी वह जो वास्तव में की नहीं जाती, बल्कि सह ली जाती है और इस प्रकार सच्ची प्रार्थना की ओर ले जाती है। बीमारियाँ और आपदाएँ इस प्रकार के उदाहरण हैं। इनके माध्यम से, पीड़ित व्यक्ति अपनी जन्मजात नपुंसकता और कमजोरी को गहराई से महसूस करते हैं; वे अपने दयालु निर्माता की शरण लेते हैं और प्रार्थना करते हैं, इस प्रकार सच्ची पूजा करने में सक्षम होते हैं।

भगवान के महान संतों की ओर से प्रामाणिक कथाएं हैं

रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो), कि

ईमान वालों का बीमारी में गुज़रा हुआ समय इबादत में गिना जाता है, बशर्ते कि वे खुदा से शिकायत न करें।1 रसूल से भी रिवायत है और रूहानी खोजी संतों से भी रिवायत है कि कुछ मरीज़ जो शुक्रगुज़ारी के साथ धैर्य दिखाते हैं, उनकी एक मिनट की बीमारी एक घंटे की इबादत के बराबर होती है और कुछ रूहानी तौर पर सिद्ध लोगों की एक मिनट की बीमारी एक दिन की इबादत के बराबर होती है। इसलिए शिकायत करने के बजाय बीमारी के लिए शुक्रगुज़ार बनो, जो तुम्हारी ज़िंदगी के एक मिनट को हज़ार मिनट के बराबर बना देती है और तुम्हें लंबी उम्र दिलाती है।

तीसरा उपाय

हे तुम जो अपनी बीमारी में अधीर हो! यह तथ्य कि इस दुनिया में आने वाले सभी लोग अनिवार्य रूप से चले जाते हैं, कि युवा बूढ़े हो जाते हैं, और यह कि दुनिया निरंतर मृत्यु और अलगाव के बीच घूम रही है, यह प्रमाणित करता है कि मानव जाति इस दुनिया में आनंद या सुख के लिए नहीं आई है। इसके अलावा, यद्यपि मानव जाति जीवित प्राणियों में सबसे उत्तम है, जीवन के उपकरणों में सबसे समृद्ध है, और वस्तुतः उन्हें उनका राजा माना जा सकता है, लेकिन अतीत के सुखों पर ध्यान केंद्रित करने और भविष्य की परेशानियों के बारे में चिंता करने के कारण, मनुष्य एक दुखद, परेशानी भरा जीवन जीते हैं, जो जानवरों से भी बहुत कम है। यह दर्शाता है कि मानव जाति इस दुनिया में आराम और सुख में रहने के लिए नहीं आई है। बल्कि, विशाल पूंजी रखने के कारण, यह यहाँ एक शाश्वत जीवन के लिए काम करने आई है

1 अल-बुखारी, "जिहाद" 134; अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 4:410. (ट्र.)

आवश्यक व्यापार करके। इसे दी गई पूंजी इसका जीवनकाल है।

बीमारी न होती तो अच्छा स्वास्थ्य और आराम लोगों को लापरवाह बना देते, दुनिया को खुशनुमा बना देते और परलोक से बेखबर कर देते। मौत और कब्र के ख्याल से ध्यान हटाकर अच्छा स्वास्थ्य और आराम उन्हें जीवन की पूंजी को छोटी-छोटी बातों में बरबाद करने पर मजबूर कर देते हैं। लेकिन बीमारी उन्हें अचानक होश में ला देती है और शरीर से कहती है: "तुम अमर नहीं हो और तुम्हें अपने हाल पर नहीं छोड़ा गया है। तुम्हारा एक कर्तव्य है। अहंकार छोड़ो; जिसने तुम्हें बनाया है, उसके बारे में सोचो; जान लो कि तुम कब्र में जाओगे और जरूरी तैयारी करो!" इस तरह, इस नजरिए से बीमारी एक सलाहकार है जो कभी धोखा नहीं देती; और यह एक चेतावनी देने वाला मार्गदर्शक है। इस वजह से, बीमारी के बारे में शिकायत करने के बजाय हमें इसके लिए शुक्रगुजार होना चाहिए। अगर यह बहुत तकलीफ और दर्द देती है, तो हमें धैर्य रखना चाहिए।

चौथा उपाय

हे बीमार और शिकायत करने वालों, तुम्हारे लिए अच्छा है कि तुम शिकायत न करो, बल्कि धन्यवाद दो और धीरज रखो।

क्योंकि तुम्हारा शरीर, उसके सभी अंग और तुम्हारी क्षमताएँ तुम्हारी संपत्ति नहीं हैं। तुमने उन्हें नहीं बनाया है, न ही तुमने अपने शरीर के किसी अंग को किसी कार्यशाला से खरीदा है। वे किसी और की संपत्ति हैं। उनके मालिक को अपनी संपत्ति पर अपनी मर्जी के अनुसार अधिकार है।

जैसा कि छब्बीसवाँ शब्द (इसमें शामिल) में कहा गया है

द वर्ड्स), एक बहुत अमीर और असीम रूप से कुशल कपड़े डिजाइनर एक साधारण आदमी को एक मॉडल के रूप में उपयोग करता है ताकि बदले में अपनी कला और अमूल्य धन का प्रदर्शन कर सके

वेतन। कुछ घंटों के लिए, वह मॉडल को अपने द्वारा बनाए गए गहनों से सजे और कलात्मक ढंग से तैयार किए गए परिधान पहनाता है। जब मॉडल इसे पहनती है, तो वह परिधान में बदलाव करता रहता है। अपनी कला की अद्भुत विविधता को प्रदर्शित करने के लिए, वह परिधान को काटता है, उसमें बदलाव करता है, उसे यहाँ लंबा करता है और वहाँ छोटा करता है। क्या वेतन पर काम करने वाली मॉडल को यह कहने का कोई अधिकार है, “झुकने और खड़े होने के आपके आदेश मुझे परेशान कर रहे हैं। इस परिधान को काटना और छोटा करना, जो मुझे और अधिक सुंदर बनाना चाहिए, मेरी सुंदरता को खराब कर रहा है”? क्या मॉडल डिजाइनर पर उसके साथ निर्दयतापूर्वक और अनुचित व्यवहार करने का आरोप लगा सकता है?

तुम जो बीमार हो! जैसा कि उस उपमा में है, सर्व-महान निर्माता - अपने सर्व-सुंदर नामों की कढ़ाई को प्रदर्शित करने के लिए और वास्तव में आपको अधिक से अधिक "सुंदर" बनाने के लिए - आपको अपने शरीर के वस्त्र में कई, विभिन्न अवस्थाओं और स्थितियों से गुजरने का कारण बनता है, जिसमें उसने आपको पहनाया है, जो देखने, सुनने, तर्क करने और महसूस करने जैसी चमकदार क्षमताओं से सुसज्जित है। जिस तरह, भूख के माध्यम से, आप उसके नाम, सर्व-प्रदाता के बारे में सीखते हैं, उसी तरह आपकी बीमारी के माध्यम से, आप उसके नाम, सर्व-उपचार को जानते हैं।

चूँकि दुःख और विपत्तियाँ उसके कुछ नामों के आदेशों और कार्यों को प्रकट करती हैं, इसलिए उनमें

ज्ञान की झलकें और दया की किरणें, जिनके भीतर असंख्य सुन्दरताएँ हैं। यदि हमारे और उसके आदेशों और कार्यों के बीच का पर्दा हटा दिया जाए, तो तुम बीमारी के पर्दे के पीछे कई सुखद और सुन्दर अर्थ पाओगे, जिससे तुम डरते हो और जिसे तुम नापसंद करते हो।

पांचवां उपाय

हे रोग से पीड़ित लोगों! मैं इस समय अनुभव से यह समझ गया हूँ कि कुछ लोगों के लिए बीमारी ईश्वरीय कृपा है, दया का उपहार है। यद्यपि मैं इसके योग्य नहीं हूँ, फिर भी पिछले आठ-नौ वर्षों से अनेक युवा लोग अपनी बीमारी के कारण मेरे पास प्रार्थना करने आए हैं। मैंने देखा है कि मेरी उम्र के अन्य लोगों की तुलना में, जो भी बीमार युवा मुझे मिले हैं, उन्होंने परलोक के बारे में सोचना शुरू कर दिया है। वे अब युवावस्था के नशे में नहीं हैं, तथा असावधानी में निहित पशुवत इच्छाओं से कुछ हद तक अपने आपको बचा लिया है। इस अवलोकन के आधार पर, मैं उन्हें याद दिलाना चाहूँगा कि उनकी सहनीय बीमारियाँ ईश्वरीय कृपा हैं।

कहो, “भाई, मैं तुम्हारी इस बीमारी का विरोधी नहीं हूँ।

मुझे आपकी बीमारी के कारण आप पर दया नहीं आ रही है, इसलिए मैं आपके लिए प्रार्थना करूँ। जब तक बीमारी आपको पूरी तरह से जगा न दे, तब तक धैर्य रखने की कोशिश करें, और जब यह अपना कर्तव्य पूरा कर लेगी, तो ईश्वर की इच्छा से, दयालु सृष्टिकर्ता आपको ठीक कर देगा।”

मैं उनसे यह भी कहूंगा:

> तुम्हारे बराबर उम्र के कुछ लोग अच्छे स्वास्थ्य की आपदा के कारण असावधान हो जाते हैं और पाँचों नमाज़ें नहीं पढ़ते; वे क़ब्र के बारे में नहीं सोचते, ईश्वर को भूल जाते हैं और एक घंटे की सांसारिक ज़िंदगी के सतही आनंद के लिए अनंत जीवन को नुकसान पहुँचाते हैं, यहाँ तक कि नष्ट कर देते हैं। लेकिन बीमारी की नज़र से तुम अपनी क़ब्र को देखते हो, जिसमें तुम्हें हर हाल में प्रवेश करना है, और उसके आगे आख़िरत के महलों को देखते हो, और उसी के अनुसार काम करते हो।

> इसका मतलब यह है कि बीमारी आपके लिए अच्छा स्वास्थ्य है, जबकि आपके कुछ साथियों का अच्छा स्वास्थ्य वास्तव में उनके लिए बीमारी है।

छठा उपाय

तुम जो बीमार हो और अपने दुख की शिकायत करते हो, मैं तुमसे कहता हूँ: अपने पिछले जीवन के बारे में सोचो और सुखद, खुश दिनों और दुखद, परेशानी भरे समय को याद करो। निश्चित रूप से, तुम या तो कहोगे, “ओह!” या, “आह!”

अर्थात्, आपका हृदय और जीभ या तो कहेंगे, “परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद हो!” या, “हाय, हाय!”

ध्यान दें कि आपको राहत की सांस लेने और यह कहने के लिए क्या प्रेरित करता है, "सभी प्रशंसा और धन्यवाद भगवान के लिए है!" यह है कि अतीत में आपके साथ हुई पीड़ाओं और विपत्तियों के बारे में सोचना एक तरह का आध्यात्मिक आनंद जगाता है और आपके दिल को आभारी बनाता है। क्योंकि दुखों का गायब होना एक खुशी है। दुखों और विपत्तियों के चले जाने से आत्मा में एक स्थायी खुशी रह जाती है।

जब इसे विचार के माध्यम से जागृत किया जाता है, तो आत्मा से धन्यवाद के साथ आनंद निकलता है।

जो बात आपको “हाय, हाय!” कहने पर मजबूर करती है, वह है अतीत में आपके द्वारा भोगा गया सुखद और खुशी भरा समय।
समाप्ति के माध्यम से, उन्होंने आपकी आत्मा में एक कभी न ख़त्म होने वाला दर्द छोड़ दिया है, ताकि जब भी आप उनके बारे में सोचें, तो वह दर्द जाग उठे और दुःख और पश्चाताप का कारण बने।

चूँकि एक दिन का अवैध आनंद कभी-कभी एक साल की आध्यात्मिक पीड़ा का कारण बनता है, जबकि एक दिन की अस्थायी बीमारी का दर्द कई दिनों की वापसी के आनंद के साथ-साथ इसके खत्म होने का आनंद भी लाता है, इस अस्थायी बीमारी के परिणाम के बारे में सोचें जो आप अभी भुगत रहे हैं और इसके संभावित पुरस्कारों के बारे में सोचें। कहो, “यह भी बीत जाएगा, भगवान की इच्छा से!” और, शिकायत करने के बजाय, धन्यवाद दें।

एक और छठा उपाय

आप, आस्थावान भाई या बहन, जो इस दुनिया के सुखों के बारे में सोचते हैं और बीमारी से परेशान हैं! अगर यह दुनिया शाश्वत होती, और अगर अनंत काल की ओर जाने वाले हमारे रास्ते में मृत्यु नहीं होती, और अगर अलगाव और मृत्यु की हवाएँ नहीं चलतीं, और अगर विपत्तिपूर्ण और तूफानी भविष्य में आत्मा की "सर्दियाँ" नहीं होतीं, तो मुझे आप पर और आपके साथ दया आती। लेकिन चूँकि दुनिया एक दिन हमसे कहेगी, "अब, यह प्रस्थान का समय है!" और इन बीमारियों से आगाह हमारी चीखों पर अपने कान बंद कर लेगी, इसलिए हमें इससे पहले कि यह हमें बाहर निकाल दे, इसके प्रति अपना प्रेम त्याग देना चाहिए। इससे पहले कि यह हमें छोड़ दे, हमें इसे अपने दिलों में त्यागने की कोशिश करनी चाहिए।

बीमारी हमें इस वास्तविकता की याद दिलाती है और कहती है, "आपका शरीर पत्थर और लोहे से नहीं बना है; बल्कि यह विभिन्न सामग्रियों से बना है जो विभाजन और विघटन के अधीन हैं। अहंकार छोड़ो, अपनी जन्मजात नपुंसकता से अवगत हो जाओ, अपने गुरु को पहचानो, अपने कर्तव्यों को जानो, और सीखो कि तुम दुनिया में क्यों आए हो!"

बीमारी दिल के कान में चुपके से यह बात कहती है।

और चूँकि इस दुनिया की खुशियाँ और आनन्द स्थायी नहीं हैं और खासकर अगर वे वैध हैं, तो यह दुखद और दर्दनाक है, इसलिए बीमारी के कारण उनके गायब होने पर रोना मत। इसके विपरीत, बीमारी को सहन करके आप जो इबादत कर रहे हैं और उसके बाद के सवाब के बारे में सोचो, और संतुष्ट रहने की कोशिश करो।

सातवां उपाय

हे बीमार, तुम जो स्वास्थ्य का सुख खो चुके हो!

आपकी बीमारी स्वास्थ्य में ईश्वरीय आशीर्वाद की संतुष्टि को नष्ट नहीं करती है; बल्कि, यह आपको इसे और अधिक गहराई से चखने का कारण बनती है, और इसे बढ़ाती है। क्योंकि अगर कोई चीज बिना रुके चलती रहती है, तो उसका असर खत्म हो जाता है। सत्य के लोग इस बात से सहमत हैं कि "चीजें उनके विपरीत के माध्यम से जानी जाती हैं।"

उदाहरण के लिए, अगर अंधकार न हो, तो प्रकाश का पता नहीं चलेगा और वह आनंद नहीं देगा। ठंड के बिना, गर्मी का पता नहीं चलेगा, और वह अप्रिय रहेगी। अगर भूख न हो, तो भोजन आनंद नहीं देगा। अगर प्यास न हो, तो पानी पीना आनंद नहीं देगा।

बीमारी के बिना, स्वास्थ्य और भूख आनंदहीन हो जाएगी।

मनुष्यों को अनेक इंद्रियाँ, अंग और क्षमताएँ देकर ताकि वे ब्रह्मांड में उनकी असंख्य नेमतों को चख सकें और पहचान सकें, सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता यह दर्शाता है कि वह चाहता है कि मनुष्य उसकी सभी नेमतों का अनुभव करें और निरंतर धन्यवाद दें। इसलिए, जैसे वह अच्छा स्वास्थ्य और भूख देता है, वैसे ही वह निश्चित रूप से बीमारियाँ और दर्द भी देगा। मैं आपसे पूछता हूँ: यदि आप अपने सिर, हाथ या पेट में यह तकलीफ़ नहीं झेल रहे होते, तो क्या आप अपने सिर, हाथ या पेट में अच्छे स्वास्थ्य के ईश्वरीय अनुग्रह की खुशी को याद करते और धन्यवाद देते? निश्चित रूप से, न केवल आपने धन्यवाद नहीं दिया होता, बल्कि आपने इस पर विचार भी नहीं किया होता! आपने उस अच्छे स्वास्थ्य को अनजाने में और लापरवाही से, और शायद बेतहाशा खर्च कर दिया होता।

आठवां उपाय

हे बीमार लोगों, अब परलोक के विषय में सोच रहे हो!

साबुन की तरह बीमारी पापों की गंदगी को धो देती है और शुद्ध करती है। यह एक प्रमाणित हदीस में स्थापित है

बीमारियाँ पापों का प्रायश्चित हैं। इसमें कहा गया है, "जैसे पेड़ को हिलाने पर पके फल गिर जाते हैं, वैसे ही बीमारी के दौरान हिलाने पर आस्तिक के पाप भी गिर जाते हैं।"

2 अल-बुखारी, "मर्दा'" 1, 2, 13; मुस्लिम, "बीरर" 14. (ट्र.)

पाप शाश्वत जीवन में स्थायी बीमारियाँ हैं। वे इस सांसारिक जीवन में हृदय, विवेक और आत्मा के लिए भी बीमारियाँ हैं। यदि आप दृढ़ रहें और शिकायत न करें, तो आप उस अस्थायी बीमारी के माध्यम से कई स्थायी बीमारियों से बच जाएँगे। लेकिन यदि आप पापों के बारे में चिंता नहीं करते हैं, या परलोक के बारे में नहीं जानते हैं, या ईश्वर को नहीं पहचानते हैं, तो आपको ऐसी बीमारी है जो आपकी वर्तमान बीमारी से लाखों गुना बदतर है।

इस पर चिल्लाओ, क्योंकि तुम्हारे हृदय, आत्मा और आत्मा का दुनिया के सभी प्राणियों के साथ संबंध है। क्षय, मृत्यु और अलगाव के माध्यम से उनके साथ तुम्हारा संबंध लगातार टूटता रहता है, जिससे तुम्हारे अंदर असंख्य घाव खुलते रहते हैं। खास तौर पर जब से तुम परलोक के बारे में नहीं जानते और मृत्यु को अनंत विनाश मानते हो, यह ऐसा है मानो तुम्हारा शरीर असंख्य घावों और बीमारियों से ग्रस्त है। इसलिए, तुम्हें सबसे पहले इन बीमारियों के इलाज के रूप में विश्वास की तलाश करनी चाहिए।

बीमार शरीर के असंख्य आध्यात्मिक घाव और बीमारियाँ। आपको अपने पंथ को सही करना चाहिए, और इस तरह के इलाज का सबसे छोटा, सबसे सीधा तरीका है अपनी जन्मजात नपुंसकता और कमजोरी की खिड़की के माध्यम से एक सर्वशक्तिमान महामहिम की शक्ति और दया को पहचानना, जिसे आपकी शारीरिक बीमारी आपको लापरवाही के पर्दे के नीचे दिखाती है जिसे उसने फाड़ दिया है।

वास्तव में, जो ईश्वर को नहीं पहचानता, वह संसार भर के क्लेशों से पीड़ित रहता है, जबकि जो ईश्वर को पहचानता है, उसका संसार प्रकाश और आध्यात्मिक आनन्द से भरपूर होता है।

हर कोई अपनी आस्था की ताकत के अनुसार इस बात को जानता है। शारीरिक बीमारियों का दर्द आध्यात्मिक आनंद, उपचार और विश्वास से मिलने वाली खुशी के नीचे पिघल जाता है।

नौवां उपाय

हे तुम जो बीमार हो और अपने सृष्टिकर्ता को स्वीकार करते हो!
लोग बीमारी से डरते हैं और परेशान रहते हैं क्योंकि यह कभी-कभी मौत का कारण बनती है। चूँकि मृत्यु सतही और लापरवाह नज़रिए से डरावनी लगती है, इसलिए ऐसी बीमारियाँ जो बीमारी का कारण बन सकती हैं, डर और चिंता का कारण बनती हैं।

इसलिए सबसे पहले यह जान लें और यकीन से मान लें कि मौत की नियत घड़ी निश्चित है और बदलती नहीं। कई बार ऐसा हुआ है कि गंभीर रूप से बीमार लोगों के पास रोते हुए स्वस्थ लोग मर गए हैं, जबकि गंभीर रूप से बीमार लोग ठीक हो गए हैं और जीवित हैं।

दूसरी बात, मौत डरावनी नहीं है; यह वैसी नहीं है जैसी दिखती है। कुरान की रोशनी के आधार पर हमने रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में यह स्पष्ट रूप से समझाया है कि ईमान वालों के लिए मौत इस जीवन के कर्तव्यों की कठिनाइयों से मुक्ति है। यह इबादत से भी राहत है, जो इस दुनिया में परीक्षाओं के मैदान में एक अभ्यास और प्रशिक्षण है।

इसके अलावा, यह उन निन्यानबे रिश्तेदारों और प्रियजनों से पुनर्मिलन का साधन है जो पहले ही दूसरी दुनिया में चले गए हैं। यह सच्ची मातृभूमि और खुशियों के शाश्वत निवास में प्रवेश करने का भी एक साधन है।

मृत्यु के बाद, हम सभी को अपने पापों से मुक्ति मिल जाती है। इसके अलावा, यह दुनिया की जेल से स्वर्ग के विशाल उद्यानों में जाने का निमंत्रण है। और यह वह समय है जब किसी व्यक्ति को सेवा के बदले में सर्व-दयालु निर्माता की कृपा से पारिश्रमिक मिलता है। चूंकि यह मृत्यु की वास्तविकता है, इसलिए हमें मृत्यु को किसी भयावह चीज के रूप में नहीं, बल्कि दया और खुशी की प्रस्तावना के रूप में देखना चाहिए।

इसके अलावा, परमेश्वर के कुछ लोगों के लिए, मृत्यु का भय स्वयं मृत्यु का भय नहीं है, बल्कि यह उनकी इस आशा के कारण है कि जीवन के कर्तव्यों को जारी रखने के माध्यम से, वे अधिक अच्छे कार्य करने के द्वारा अधिक पुण्य अर्जित करेंगे।

आस्थावान लोगों के लिए मृत्यु ईश्वरीय दया का द्वार है, जबकि गुमराह लोगों के लिए यह अनन्त अंधकार का गड्ढा है।

दसवां उपाय

आप जो बीमार हैं और बेवजह चिंता कर रहे हैं! आपकी चिंता आपकी बीमारी की गंभीरता के कारण है, लेकिन आपकी चिंताएँ आपकी बीमारी को और गंभीर बना देती हैं। अगर आप चाहते हैं कि आपकी बीमारी कम गंभीर हो, तो इसके बारे में चिंता न करें। यानी, अपनी बीमारी के लाभों के बारे में सोचें, इससे मिलने वाले आध्यात्मिक पुरस्कारों के बारे में सोचें और यह सोचें कि यह जल्दी ठीक हो जाएगी। चिंता करना छोड़ दें और बीमारी को जड़ से खत्म कर दें।

वास्तव में, चिंता बीमारी के बोझ को दोगुना कर देती है; आपकी शारीरिक बीमारी के अतिरिक्त, यह आपके हृदय में एक अमूर्त बीमारी पैदा करती है, जिस पर शारीरिक बीमारी हावी हो जाती है।

यह चिंता किस पर निर्भर करती है और किस माध्यम से बनी रहती है। यदि वह चिंता समर्पण, त्याग और बीमारी में निहित ज्ञान के बारे में सोचने के माध्यम से गायब हो जाती है, तो बीमारी की एक महत्वपूर्ण जड़ कट जाएगी। यह कम गंभीर हो जाती है और आंशिक रूप से गायब हो जाती है। कभी-कभी एक छोटी शारीरिक बीमारी केवल चिंता और आशंका के कारण दस गुना बढ़ जाती है। जब चिंता और आशंका समाप्त हो जाती है, तो बीमारी का नौ दसवां हिस्सा गायब हो जाता है। बीमारी को बढ़ाने के अलावा, चूंकि चिंता ईश्वरीय ज्ञान के खिलाफ एक आरोप है, ईश्वरीय दया की आलोचना है, और सर्व-दयालु निर्माता के बारे में शिकायत है, यह प्रति-दुख का कारण बनती है, और बीमारी को बढ़ाती है।

वास्तव में, जिस तरह आभार व्यक्त करने से अनुग्रह बढ़ता है, उसी तरह शिकायतें बीमारियों और दुखों को बढ़ाती हैं। इसके अलावा, चिंता अपने आप में एक बीमारी है। इसका इलाज बीमारी में निहित ज्ञान को जानना है। चूँकि अब आप बीमारी में निहित ज्ञान और उसके लाभों से अवगत हैं, इसलिए चिंता पर मरहम लगाएँ और राहत पाएँ। “आह!” के बजाय “ओह!” कहें और “हाय!” और “ओह डियर!” के बजाय “हर स्थिति के लिए भगवान की प्रशंसा हो!” कहें।

ग्यारहवां उपाय

हे विश्वासी भाई या बहन! तुम जो बीमार और अधीर हो! यद्यपि तुम्हारी वर्तमान बीमारी तुम्हें कुछ कष्ट देती है, परन्तु तुम्हारी सभी पिछली बीमारियों ने तुम्हारी आत्मा में एक अमूर्त संतुष्टि उत्पन्न की है, जिसके परिणामस्वरूप तुम उनसे ठीक हो गए हो, और एक आध्यात्मिक आनंद उत्पन्न हुआ है-

उन्हें सहने के लिए मिले इनाम से। आज से, यहाँ तक कि इस घंटे से भी, कोई बीमारी नहीं हो सकती, इसलिए जो चीज़ मौजूद नहीं है, उससे कोई दर्द नहीं हो सकता। और अगर कोई दर्द नहीं है, तो कोई दुख नहीं है।

लेकिन चूंकि आप इसके विपरीत सोचते हैं, इसलिए आप अधीरता दिखा रहे हैं। क्योंकि आज से पहले बीमारी के सभी समय, उनके द्वारा दिए गए दर्द के साथ गायब हो गए हैं, बीमारी के कारण मिलने वाले पुरस्कार और उनके जाने से मिलने वाली खुशी को छोड़कर। इसलिए, जब वे आपको लाभ और खुशी का एहसास दिलाते हैं, तो उनके बारे में सोचना और दुखी होना या अधीर होना पागलपन है।

भविष्य के दिन अभी नहीं आए हैं। अब उनके बारे में सोचना और दुखी होना और उस दिन के बारे में सोचकर अधीरता दिखाना जो अस्तित्व में नहीं है, या एक बीमारी जो अस्तित्व में नहीं है, या एक पीड़ा जो अस्तित्व में नहीं है, और इस तरह अस्तित्व के तीन डिग्री को अस्तित्व का रंग देना - अगर यह पागलपन नहीं है, तो क्या है?

चूँकि बीमारी के समय ने अब तक सुख दिया है और उसके बाद के समय और बीमारियाँ और दुःख (जो तुम सोचते हो कि वे ला सकते हैं) अस्तित्वहीन हैं, इसलिए सर्वशक्तिमान ईश्वर ने तुम्हें जो धैर्य दिया है, उसे दाएं और बाएं न बिखेरो, बल्कि वर्तमान समय के दुःख के विरुद्ध उसे सक्रिय करो। कहो, "हे धैर्यवान!" और इसे सहन करो।

बारहवां उपाय

जो लोग बीमारी के कारण नियमित पूजा-पाठ या प्रार्थना नहीं कर पाते और इस बात का अफसोस करते हैं!

हदीस में कहा गया है , "एक पवित्र, ईश्वर-भक्त आस्तिक, जो बीमारी के कारण, सामान्य रूप से और नियमित रूप से प्रार्थना नहीं कर सकता है, उसे समान पुरस्कार मिलता है।"3 बीमारी बीमार व्यक्ति की अतिरिक्त प्रार्थनाओं का स्थान लेती है जो यथासंभव अपनी अनिवार्य पूजा करता है और ईश्वर पर विनम्र निर्भरता में धैर्य दिखाता है।

इसके अलावा, बीमारी लोगों को उनकी जन्मजात नपुंसकता और कमज़ोरी की याद दिलाती है, और उन्हें मौखिक रूप से और अपनी स्थिति की जीभ के माध्यम से प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करती है। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मनुष्यों को असीम नपुंसकता और कमज़ोरी के साथ बनाया है ताकि वे लगातार ईश्वरीय दरबार में शरण लें और प्रार्थना और दुआ करें। चूँकि, आयत के अनुसार, कहो: "मेरा रब तुम्हारी परवाह नहीं करता अगर तुम प्रार्थना न करते" (25:77) मानवता के निर्माण में बुद्धिमत्ता और उसके मूल्य का कारण ईमानदारी से प्रार्थना है, और चूँकि बीमारी लोगों को ऐसी प्रार्थनाओं की ओर ले जाती है, इसलिए बीमारी के बारे में शिकायत करने के बजाय, हमें ईश्वर का शुक्रिया अदा करना चाहिए, और प्रार्थना के उस स्रोत को बंद नहीं करना चाहिए जो बीमारियों के कारण बह रहा है।

तेरहवां उपाय

तुम जो दुखी हो और अपनी बीमारी की शिकायत करते हो!
बीमारी कुछ लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण खजाना और एक बहुत ही मूल्यवान ईश्वरीय उपहार है। हर बीमार व्यक्ति अपनी बीमारी पर इस दृष्टिकोण से विचार कर सकता है।

3 अबू दाऊद, "जनाईज़" 1; अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 4:418 (त्र.)

हमारी मृत्यु का नियत समय हमें अज्ञात है।

इसलिए लोगों को निराशा और असावधानी से बचाने के लिए और उन्हें भय और आशा के बीच में रखने के लिए और ऐसी स्थिति में रखने के लिए जिससे वे न तो दुनिया में और न ही आख़िरत में हारें, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मृत्यु के नियत समय को छिपा दिया है। चूँकि मृत्यु कभी भी आ सकती है, इसलिए यदि वह मनुष्य को असावधानी में जकड़ ले, तो उसके अनन्त जीवन को बहुत नुकसान पहुँच सकता है। लेकिन बीमारी असावधानी को दूर करती है, लोगों को उनके परलोक के बारे में सोचने पर मजबूर करती है और उन्हें मृत्यु और मृत्यु की याद दिलाती है।

इस प्रकार वे परलोक के लिए तैयारी करते हैं। कभी-कभी वे इतना अधिक लाभ कमा लेते हैं कि बीस दिन में ही वह पद प्राप्त कर लेते हैं जो अन्यथा बीस वर्षों में भी प्राप्त नहीं कर सकते थे।

उदाहरण के लिए, मेरे दोस्तों में दो नौजवान थे, अल्लाह उन पर रहम करे, इलेमा गाँव के सबरी और इस-लमकोय के वज़ीरज़ादे मुस्तफ़ा। मैं हैरानी से देखता था कि हालाँकि ये दोनों अनपढ़ थे और रिसाले-ए-नूर की नकल करके सेवा नहीं कर सकते थे, लेकिन वे ईमानदारी और ईमान की सेवा में सबसे आगे थे। मुझे नहीं पता था कि ऐसा क्यों था। उनकी मौत के बाद मुझे पता चला कि दोनों को एक गंभीर बीमारी हो गई थी। उस बीमारी से प्रेरित होकर, दूसरे लापरवाह नौजवानों के विपरीत, जो अनिवार्य इबादत नहीं करते थे, उनमें अल्लाह के लिए बड़ी श्रद्धा थी, और उन्होंने सबसे मूल्यवान सेवाएँ कीं, जिससे आख़िरत के लिए फ़ायदेमंद स्थिति प्राप्त हुई। अल्लाह चाहेगा-

दो साल की बीमारी की तकलीफ़ लाखों साल के अनंत जीवन के आनंद का साधन थी। अब मुझे समझ में आ गया है कि मैं कभी-कभी उनके स्वास्थ्य के लिए जो प्रार्थनाएँ करता था, वे इस दुनिया के लिए अभिशाप थीं।

मुझे आशा है कि परलोक में उनकी भलाई के लिए मेरी प्रार्थना स्वीकार की जाएगी।

इस प्रकार मेरा यह मानना है कि इन दोनों ने उतना ही लाभ प्राप्त किया जितना दस वर्ष की तक़वा और परहेज़गारी से प्राप्त होता है। यदि उन्होंने कुछ युवकों की तरह अपनी जवानी और अच्छी सेहत पर भरोसा किया होता और अपने आपको लापरवाही और व्यभिचार में फँसने दिया होता और यदि मृत्यु, जो हमेशा घात लगाए रहती है, उन्हें उनके पापों की गंदगी के बीच में ही पकड़ लेती, तो उनकी क़ब्रें प्रकाश के उस ख़ज़ाने के बजाय बिच्छुओं और साँपों के घर होतीं।

चूँकि बीमारी में इतने लाभ हैं, इसलिए हमें इसके बारे में शिकायत नहीं करनी चाहिए, बल्कि ईश्वर पर धैर्यपूर्वक भरोसा रखते हुए, उनके प्रति कृतज्ञता और उनकी दया पर विश्वास रखते हुए इसे सहन करना चाहिए।

चौदहवाँ उपाय

तुम जो बीमार हो क्योंकि तुम्हारी आँखों में मोतियाबिंद है! अगर तुम जानते कि मोतियाबिंद के नीचे कितनी रोशनी और आध्यात्मिक दृष्टि छिपी है जो एक आस्तिक की आँखों को ढक सकती है, तो तुम कहोगे, "मेरे दयालु भगवान को एक लाख धन्यवाद।" मैं तुम्हें इस मरहम को समझाने के लिए एक घटना सुनाता हूँ। यह इस प्रकार है:

एक बार बरला के सुलेमान की बुआ, जिसने आठ साल तक पूरी निष्ठा से और बिना किसी को नाराज़ किए मेरी सेवा की, अंधी हो गई। मेरे हक़ से सौ गुना ज़्यादा अच्छा सोचते हुए, उस नेक औरत ने मुझे मस्जिद के दरवाज़े पर पकड़ लिया और मुझसे उसकी आँखों के ठीक होने के लिए दुआ माँगी। इसलिए मैंने उस नेक औरत की नेकी को अपनी दुआ का शरीक बनाया और विनती की, "ऐ रब! उसके नेक काम की वजह से उसकी आँखों की रोशनी लौटा दे।"

दो दिन बाद, बुरदुर से एक नेत्र विशेषज्ञ आया और उसने मोतियाबिंद हटा दिया। लेकिन चालीस दिन बाद वह फिर से अपनी दृष्टि खो बैठी। मैं बहुत दुखी हुआ और उसके लिए दिल से प्रार्थना की। मुझे उम्मीद है कि उसके परलोक के लिए प्रार्थना स्वीकार की गई होगी, वरना मेरी प्रार्थना उसके लिए सबसे गलत अभिशाप थी। क्योंकि उसकी मृत्यु में केवल चालीस दिन और बचे थे; चालीस दिन बाद वह मर गई—

भगवान उस पर दया करें.

इस प्रकार, वृद्धावस्था की आंखों से बरला के दयनीय बगीचों को दु:खपूर्वक देखने के बजाय, उसने चालीस हजार दिनों तक अपनी कब्र से स्वर्ग के बगीचों को देखने में सक्षम होकर लाभ कमाया, क्योंकि उसका दृढ़ विश्वास था और वह पूरी तरह से धर्मी थी।

अगर कोई आस्तिक अपनी दृष्टि खो देता है और अंधे होकर कब्र में प्रवेश करता है, तो वह अपनी डिग्री के अनुसार कब्र के अन्य लोगों की तुलना में प्रकाश की दुनिया को बहुत अधिक हद तक देख सकता है। जिस तरह इस दुनिया में हम कई ऐसी चीजें देखते हैं जो अंधे आस्तिक नहीं देख पाते, अगर वे ऐसा करते हैं।

इस दुनिया से ईमान लेकर जाते हैं, वे कब्र के दूसरे लोगों से ज़्यादा दूर तक देखते हैं। जैसे कि सबसे शक्तिशाली दूरबीनों से देख रहे हों, वे अपनी डिग्री के हिसाब से स्वर्ग के बगीचों को एक फिल्म के पर्दे की तरह देख और निहार सकते हैं।

इस प्रकार, धन्यवाद और धैर्य के माध्यम से आप अपनी वर्तमान आंख पर मौजूद पर्दे के नीचे एक ऐसी आंख पा सकते हैं जो प्रकाश से भरी और प्रकाश फैलाने वाली है और जिसके साथ आप धरती के नीचे रहते हुए आकाश के ऊपर स्वर्ग को देख और देख सकते हैं। वह नेत्र विशेषज्ञ जो आपकी वर्तमान आंख से पर्दा हटा देगा और आपको उस आंख से देखने में सक्षम करेगा, वह बुद्धिमतापूर्ण कुरान है।

पंद्रहवां उपाय

ऐ बीमार और आहें भरने वाले और विलाप करने वालों! बीमारी के बाहरी पहलू पर विचार न करो और आहें मत भरो; बीमारी के अर्थ पर विचार करो और संतुष्ट रहो। अगर बीमारी का अर्थ अच्छा न होता तो दयालु सृष्टिकर्ता अपने सबसे प्यारे बंदों को बीमारी न देता। एक हदीस में है, "सबसे कठिन परीक्षाओं से पीड़ित लोग पैगंबर हैं, फिर उनके जैसे लोग, और फिर उनके जैसे लोग।"[4] यानी जो लोग सबसे अधिक कष्ट और कठिनाई से पीड़ित हैं, वे सबसे अच्छे लोग हैं, उनमें सबसे परिपूर्ण हैं। पैगंबर, जिनमें विशेष रूप से पैगंबर अय्यूब शामिल हैं, उन पर शांति हो, फिर संत, और फिर अधिकार में सबसे आगे रहने वाले लोग।

4 एट-तिर्मिधि, "ज़ुहद" 57; इब्न माजा, "फ़ितन" 23. (ट्र.)

पैगम्बरों और संतों ने अपनी बीमारियों को दयालु ईश्वर की ओर से सच्ची पूजा और उपहार के रूप में देखा है। उन्होंने धैर्य के साथ धन्यवाद दिया है। उन्होंने इन बीमारियों को दयालु निर्माता की करुणा द्वारा की गई शल्य चिकित्सा के रूप में देखा है।

हे रोओ और विलाप करो! यदि तुम इस प्रकाश फैलाने वाले कारवां में शामिल होना चाहते हो, तो धैर्य के साथ धन्यवाद दो।
क्योंकि यदि तुम शिकायत करोगे तो वे तुम्हें अपने बीच में नहीं आने देंगे। तुम गुमराह लोगों के गड्ढों में गिरोगे और अंधकारमय मार्ग पर चलोगे।

दरअसल, कुछ बीमारियाँ ऐसी होती हैं जो अगर मौत का कारण बनती हैं तो एक तरह की शहादत की तरह होती हैं। वे किसी व्यक्ति को एक निश्चित हद तक संतत्व प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए, जो विश्वासी महिलाएँ प्रसव के दौरान या प्रसव के कारण मर जाती हैं,5 जो पेट में दर्द से, डूबने से, जलने से या प्लेग से मर जाती हैं, उन्हें शहीद माना जाता है।6 ऐसी और भी धन्य बीमारियाँ हैं जो उनसे मरने वाले व्यक्ति को संतत्व प्रदान करने में मदद करती हैं। इसके अलावा, चूँकि बीमारी दुनिया के प्रति प्रेम और आसक्ति को कम करती है, इसलिए यह दुनिया से विदा होने के दर्द को हल्का करती है, जो सांसारिक लोगों के लिए बहुत दुखद होता है। कभी-कभी यह ऐसी विदाई को वांछनीय बना देती है।

5 यदि कोई गर्भवती स्त्री बच्चे को जन्म देने के चालीस दिन के अन्दर मर जाती है तो उसे किसी प्रकार की शहादत प्राप्त हो सकती है।

6 अल-बुहारी, "जिहाद" 30; मुस्लिम, ''इमारा'' 164. (ट्र.)

सोलहवां उपाय

तुम जो बीमार हो और अपनी परेशानी की शिकायत करते हो! बीमारी सम्मान और करुणा को प्रेरित करती है, जो मानव सामाजिक जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण और अच्छा है। यह लोगों को आत्मनिर्भरता की दंभपूर्ण भावनाओं से बचाता है, जो उन्हें अमित्रता और निर्दयता की ओर ले जाती है।

क्योंकि, वास्तव में नहीं, बल्कि मनुष्य अनियंत्रित और विद्रोही है, क्योंकि वह खुद को आत्मनिर्भर मानता है (96: 6–7), एक शारीरिक, बुराई करने वाली आत्मा जो अच्छे स्वास्थ्य और कल्याण के कारण आत्मनिर्भर महसूस करती है, वह उन कई कारणों पर ध्यान नहीं देती जो भाईचारे के योग्य हैं। और वे दुर्भाग्य से पीड़ित या बीमार लोगों के प्रति दया महसूस नहीं करते, जिन पर दया और तरस दिखाया जाना चाहिए। फिर भी, जब भी वे बीमार पड़ते हैं, तो वे अपनी जन्मजात नपुंसकता और ज़रूरत के बारे में जानते हैं, और अपने बहनों और भाइयों के प्रति सम्मान महसूस करते हैं जो इसके योग्य हैं। वे अपने विश्वासी भाइयों और बहनों का सम्मान करते हैं जो उनसे मिलने आते हैं या उनकी मदद करते हैं। और वे मानवीय दया महसूस करते हैं, जो आपदा से पीड़ित लोगों के लिए सहानुभूति और करुणा से उत्पन्न होती है - एक सबसे महत्वपूर्ण इस्लामी विशेषता।

दूसरों की खुद से तुलना करते हुए, वे उनके साथ सहानुभूति रखते हैं, उनके प्रति स्नेह महसूस करते हैं, और उनकी मदद करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। कम से कम वे दूसरों के लिए प्रार्थना करते हैं और उन्हें सांत्वना देने के लिए उनसे मिलने जाते हैं, जो कि शरीयत के अनुसार सुन्नत का काम है,7 इस प्रकार वे सवाब कमाते हैं।

7 मुस्लिम, "बीरर" 40; अबू दाऊद, "जनाईज़" 7; एट-तिर्मिधि, "जनाईज़" 2. (ट्र.)

सत्रहवाँ उपाय

तुम जो बीमार हो और शिकायत करते हो कि बीमारी की वजह से अच्छे काम नहीं कर पा रहे हो! शुक्रिया अदा करो! यह बीमारी ही है जो तुम्हारे लिए सबसे नेक कामों का द्वार खोलती है। बीमारी बीमार व्यक्ति और जो लोग ईश्वर के लिए उनकी देखभाल कर रहे हैं, उनके लिए निरंतर सवाब पाने का सबसे महत्वपूर्ण साधन है; इसके अलावा, यह प्रार्थनाओं को स्वीकार करने का एक साधन भी है।

बेशक, बीमारों की देखभाल करने वाले ईमान वालों के लिए बहुत बड़ा सवाब है। बीमारों का हालचाल पूछना और उनसे मिलना - बशर्ते कि इससे उन पर कोई बोझ न पड़े - सुन्नत है, हमारे पैगम्बर ने इस काम की बहुत सिफ़ारिश की है - उन पर शांति और आशीर्वाद हो।8 यह पापों का प्रायश्चित भी है। एक हदीस में कहा गया है, "बीमारों की दुआएँ स्वीकार करो, क्योंकि उनकी दुआएँ स्वीकार की जाती हैं।"9

खास तौर पर अगर बीमार व्यक्ति कोई रिश्तेदार है, खास तौर पर माता-पिता, तो उनकी देखभाल करना इबादत का एक अहम रूप है जिससे बहुत ज़्यादा फ़ायदा मिलता है। बीमार व्यक्ति के दिल को खुश करना और उसे दिलासा देना दान देने के समान है। वह व्यक्ति भाग्यशाली है जो बीमार होने पर अपने माता-पिता के दिल को खुश करता है और उनकी प्रार्थना सुनता है। वास्तव में, फ़रिश्ते भी ताली बजाते हुए कहते हैं, "कितना अच्छा, कितना धन्य है कि

---

8 अल-बुखारी, "मर्दा'" 4, 5; मुस्लिम, "सलाम" 47. (ट्र.)

9 इब्न माजाह "जनाईज़" 1; अल-बहाकी, शुआब अल-ईमान, 6:541। (ट्र.)

है! ईश्वर उन्हें भरपूर पुरस्कार दे!” उन अच्छे बच्चों के विश्वासपूर्ण दृश्यों के सामने जो अपने माता-पिता की करुणा और देखभाल का जवाब देते हैं - जो समाज के जीवन में सम्मान के सबसे योग्य हैं - उनकी बीमारी के दौरान पूर्ण सम्मान और पुत्रवत दयालुता के साथ, मानवता की उत्कृष्टता को दर्शाते हैं।

बीमारी के दौरान रोगी के आस-पास के लोगों की दया, करुणा और सहानुभूति से बहुत खुशी और आनंद मिलता है; वे बीमारी के दर्द को कम कर देते हैं। बीमार की प्रार्थनाओं का स्वीकार होना बहुत महत्वपूर्ण है। पिछले तीस-चालीस वर्षों से मैं खुद भी अपने कटि-शूल से छुटकारा पाने के लिए प्रार्थना करता रहा हूँ। लेकिन मैं समझता हूँ कि यह बीमारी मुझे प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहन के रूप में दी गई है। चूँकि प्रार्थना के द्वारा प्रार्थना को दूर नहीं किया जा सकता, अर्थात् चूँकि प्रार्थना अपने आप दूर नहीं हो सकती, इसलिए मैंने समझा कि प्रार्थनाओं का उत्तर परलोक में मिलेगा और बीमारी अपने आप में एक प्रकार की पूजा है, क्योंकि बीमारी के द्वारा व्यक्ति अपनी जन्मजात नपुंसकता का एहसास करता है और ईश्वरीय दरबार में शरण लेता है।

इसलिए, यद्यपि मैंने तीस वर्षों तक स्वस्थ होने के लिए प्रार्थना की है और स्पष्टतः मेरी प्रार्थना स्वीकार नहीं की गई है, फिर भी मेरे मन में कभी भी प्रार्थना छोड़ देने का विचार नहीं आया।
क्योंकि बीमारी प्रार्थना का अवसर या कारण है;

10 कुछ बीमारियाँ प्रार्थना करने को प्रेरित करती हैं और प्रार्थना का कारण भी होती हैं। इसलिए अगर प्रार्थना से बीमारी समाप्त हो जाती है तो प्रार्थना से बीमारी का कारण भी समाप्त हो जाएगा। यह बात स्वीकार नहीं की जा सकती।

ठीक होना प्रार्थना का प्रभाव नहीं है। यदि सर्वज्ञ और दयालु परमेश्वर उपचार प्रदान करता है, तो वह अपनी शुद्ध कृपा से प्रदान करता है।

इसके अलावा, अगर प्रार्थनाएँ हमारी इच्छा के अनुसार स्वीकार नहीं की जाती हैं, तो यह नहीं कहा जाना चाहिए कि उनका उत्तर नहीं दिया गया है। सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता हमसे बेहतर जानता है; वह हमारे लिए जो अच्छा है, वह देता है। कभी-कभी हमारे हित में वह हमारे सांसारिक जीवन के लिए हमारी प्रार्थनाओं को हमारे परलोक के नाम पर स्वीकार करता है। किसी भी स्थिति में, एक प्रार्थना जो किसी बीमारी के कारण ईमानदारी से प्राप्त होती है और जो हमारी जन्मजात कमजोरी, नपुंसकता, विनम्रता और विशेष रूप से आवश्यकता से उत्पन्न होती है, वह स्वीकार किए जाने के बहुत करीब है। बीमारी इस तरह की ईमानदारी से की जाने वाली प्रार्थना का साधन है। बीमार जो धार्मिक हैं और आस्तिक जो बीमारों की देखभाल करते हैं, दोनों को इस प्रार्थना का अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए।

अठारहवाँ उपाय

तुम जो बीमार हो और शुक्र अदा करना छोड़ कर अब शिकायत करने लगे हो! शिकायत शिकायत करने के अधिकार से पैदा होती है। तुम्हारा कोई अधिकार नहीं छीना गया है, न ही तुमने कोई ऐसी चीज़ खोई है जिसके लिए तुम शिकायत कर सको। बल्कि तुम्हारे लिए बहुत से शुक्र अदा करना अनिवार्य है, लेकिन तुमने उन्हें पूरा नहीं किया।

सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन किए बिना, जो कि आप पर उसका अधिकार है, आप शिकायत कर रहे हैं जैसे कि आप अधिकारों की मांग कर रहे हैं जो कि उचित नहीं है। आप दूसरों की ओर नहीं देख सकते जो

जो लोग स्वास्थ्य के मामले में तुमसे बेहतर हैं और शिकायत करते हैं। बल्कि तुम पर यह आरोप है कि तुम उन लोगों को देखो जो स्वास्थ्य के मामले में तुमसे बदतर हैं और धन्यवाद दो। अगर तुम्हारा हाथ टूटा है, तो उन लोगों को देखो जिनके हाथ काटे गए हैं।

यदि आपके पास केवल एक आँख है, तो उन अंधों को देखें, जिनकी दोनों आँखें नहीं हैं। और परमेश्वर को धन्यवाद दें!

बेशक, किसी को भी यह अधिकार नहीं है कि वह दूसरों को अपने से ज़्यादा फ़ायदेमंद समझे और शिकायत करे। और मुसीबतों में, हर किसी को यह अधिकार है कि वह अपने से कमतर लोगों के बारे में सोचे और इस तरह उनका शुक्रिया अदा करे। इस सच्चाई को रिसाले-ए-नूर में कई जगहों पर एक उपमा के साथ समझाया गया है, जिसका सारांश इस प्रकार है:

एक व्यक्ति एक गरीब बेचारे को मीनार के ऊपर ले जाता है। हर कदम पर वह उस बेचारे को एक अलग उपहार, एक अलग इनाम देता है। मीनार के ठीक ऊपर वह उसे सबसे बड़ा उपहार देता है। हालाँकि वह उन सभी उपहारों के बदले में धन्यवाद और कृतज्ञता का पात्र है, लेकिन वह बदतमीज़ बेचारा हर कदम पर मिले उपहारों को भूल जाता है, या उन्हें महत्वहीन समझता है, और धन्यवाद दिए बिना, अपने ऊपर देखता है और शिकायत करना शुरू कर देता है, कहता है: "काश यह मीनार और ऊँची होती, तो मैं और भी ऊपर चढ़ सकता था।

यह वहाँ के उस पहाड़ या दूसरी मीनार जितना ऊँचा क्यों नहीं है? यदि वह इस तरह शिकायत करने लगे, तो यह कितनी बड़ी कृतघ्नता है, कितना बड़ा अन्याय है!

इसी तरह, हर मनुष्य शून्य से अस्तित्व में आता है, और वह कोई चट्टान या पत्थर नहीं होता।

एक पेड़ या जानवर, इंसान बन जाता है। इसके अलावा, मुसलमान होना एक और बड़ी सौगात है। ज़्यादातर समय, हम अच्छे स्वास्थ्य का आनंद लेते हैं और हमें बहुत सी सौगातों से नवाज़ा जाता है। इन सबके बावजूद, शिकायत करना और अधीरता दिखाना क्योंकि हम खुद से जुड़ी कुछ कमियों के कारण कुछ सौगातों के लायक नहीं हैं, या क्योंकि हम उन्हें गलत विकल्पों या दुर्व्यवहारों के कारण खो देते हैं, या क्योंकि हम उन्हें प्राप्त करने में असमर्थ थे, और इस तरह ईश्वरीय प्रभुत्व की आलोचना करते हुए कहते हैं, "मैंने ऐसा क्या किया है जिससे मेरे साथ ऐसा हुआ?" एक आध्यात्मिक बीमारी है जो शारीरिक बीमारी से ज़्यादा विनाशकारी है। टूटे हुए हाथ से लड़ने की तरह, शिकायत बीमारी को और भी बदतर बना देती है। समझदार व्यक्ति वह है जिसे घोषित किया जाता है,

> जो लोग जब कोई मुसीबत आ पड़ती है तो कहते हैं कि हम अल्लाह ही के हैं और उसी की ओर हमें लौटकर जाना है। (2:156)

और सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रति समर्पण में धैर्य दिखाता है, ताकि बीमारी अपना कर्तव्य पूरा कर सके और चली जाए।

उन्नीसवां उपाय

भगवान के शाश्वत रूप से सभी के लिए वांछित होने को दर्शाने वाले शब्द के रूप में, जबकि उन्हें स्वयं किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है, "सर्वसुंदर नाम" दर्शाते हैं कि महामहिम के सर्व-कृपालु के सभी नाम सुंदर हैं। सृजित प्राणियों में, सबसे सूक्ष्म, सबसे सुंदर,

ईश्वर की अनंत काल तक प्रार्थना करने वाली सत्ता को प्रतिबिंबित करने वाला सबसे व्यापक दर्पण जीवन है। सुंदरता का दर्पण सुंदर है। वह दर्पण जो दिखाता है

सुन्दर की सुन्दरता सुन्दर हो जाती है। बस

जिस प्रकार दर्पण में ऐसी सुन्दरता के माध्यम से जो कुछ घटित होता है, वह अच्छा और सुन्दर होता है, उसी प्रकार सत्य की दृष्टि से जीवन में जो कुछ घटित होता है, वह अच्छा होता है, क्योंकि वह सर्व सुन्दर नामों की सुन्दर छापों को प्रदर्शित करता है, जो कि सर्वथा अच्छे और सुन्दर हैं।

अगर जीवन हमेशा स्वस्थ और भूखमरी के साथ नीरसता से गुज़रता है, तो यह एक अपूर्ण दर्पण बन जाता है। दरअसल, एक तरह से यह अस्तित्वहीनता और कुछ न होने का संकेत देता है और थकावट का कारण बनता है। यह जीवन के मूल्य को कम करता है और जीवन के आनंद को दुख में बदल देता है।

अपना समय जल्दी से जल्दी गुजारने के इरादे से, ऊब के कारण लोग खुद को या तो मौज-मस्ती में या फिर ध्यान भटकाने में लगा देते हैं। वे अपने मूल्यवान जीवन के प्रति शत्रुतापूर्ण हो जाते हैं, जैसे कि यह जेल की सजा हो, और इसे खत्म कर देना चाहते हैं, और इसे जल्दी से जल्दी गुजार देना चाहते हैं। इसके विपरीत, एक ऐसा जीवन जो परिवर्तन और क्रिया और विभिन्न अवस्थाओं में घूमता है, उसका मूल्य हमें महसूस होता है, और हमें इसके महत्व और आनंद को पहचानने में सक्षम बनाता है। भले ही यह परेशानियों और दुर्भाग्य से भरा जीवन हो, लेकिन ऐसा जीवन जीने वाला व्यक्ति नहीं चाहता कि जीवन जल्दी से गुजर जाए। वे ऊब के कारण कोई शिकायत नहीं करते; वे यह नहीं कहते, “हाय! सूरज अभी तक नहीं डूबा है,” या, “अभी भी रात है।”

एक अमीर और बेकार सज्जन व्यक्ति से पूछिए जो विलासिता की गोद में रह रहा है और जिसके पास कुछ भी कमी नहीं है, "आप कैसे हैं?"

आप निश्चित रूप से एक दयनीय उत्तर सुनेंगे, जैसे कि, "समय कभी नहीं बीतता। चलो बैकगैमौन का खेल खेलते हैं। या चलो समय बिताने के लिए कोई और विकर्षण खोजते हैं।"
अन्यथा आप दीर्घकालिक सांसारिक महत्वाकांक्षाओं से उत्पन्न शिकायतें सुनेंगे, जैसे, "मैंने यह प्राप्त नहीं किया है; काश मैंने वह कार्य किया होता।"

फिर किसी मुसीबत में फंसे व्यक्ति, मजदूर या गरीब आदमी से पूछो, "कैसे हो?" अगर वे समझदार हैं, तो वे जवाब देंगे, "मेरे रब का शुक्र है, मैं ठीक हूँ और काम कर रहा हूँ। अगर शाम इतनी जल्दी न होती, तो मैं यह काम पूरा कर लेता!"

समय बहुत जल्दी बीत जाता है, और जीवन बिना रुके चलता रहता है। निश्चित रूप से, मेरे पास परेशानियाँ और कठिनाइयाँ हैं, लेकिन वे भी बीत जाएँगी। सब कुछ जल्दी बीत जाता है।" वास्तव में, ऐसा व्यक्ति कह रहा है कि जीवन कितना मूल्यवान है और उसे इसके बीत जाने का कितना अफसोस है। इसका मतलब है कि वे जीवन के आनंद और मूल्य को नहीं समझते हैं जो कठिनाई और श्रम के साथ आता है, जबकि आराम और स्वास्थ्य जीवन को कड़वा बनाते हैं और इसे बीत जाने की इच्छा रखते हैं।

हे मुसलमान भाई या बहन, जो बीमार हैं! जैसा कि रिसाले-ए-नूर के कुछ अन्य भागों में स्पष्ट रूप से और विस्तार से समझाया गया है, जान लें कि विपत्तियों और बुराइयों और यहां तक कि पापों की उत्पत्ति और संस्कृति गैर-ईश्वरीय है।

अस्तित्व। जहाँ तक गैर-अस्तित्व की बात है, यह बुराई और अंधकार है।
ऐसा इसलिए है क्योंकि निरंतर सहजता, मौन, जड़ता और गतिहीनता जैसी अवस्थाएं गैर-अस्तित्व और शून्यता के करीब हैं, जिससे वे गैर-अस्तित्व के अंधेरे को महसूस करते हैं।

अस्तित्व और संकट का कारण। जहाँ तक क्रिया और परिवर्तन का सवाल है, वे अस्तित्व हैं और अस्तित्व को महसूस कराते हैं। और अस्तित्व शुद्ध अच्छाई है, और यह प्रकाश है।

चूंकि यह एक वास्तविकता है, इसलिए आपकी बीमारी को आपके शरीर में एक अतिथि के रूप में भेजा गया है ताकि वह आपके बहुमूल्य जीवन को शुद्ध करने, उसे मजबूत बनाने और विकसित करने जैसे कई कर्तव्यों को पूरा करे, साथ ही आपके शरीर के अन्य अंगों और क्षमताओं को आपके अस्वस्थ भाग की सहायता के लिए प्रेरित करे, और सर्वज्ञ निर्माता के विभिन्न नामों के छापों को प्रदर्शित करे।

भगवान की इच्छा से, बीमारी जल्दी ही अपना काम पूरा करके चली जाएगी। और वह अच्छे स्वास्थ्य से कहेगी, "अब तुम आओ, और मेरे यहाँ स्थायी रूप से रहो, और अपने कर्तव्यों का पालन करो। यह घर तुम्हारा है। यहाँ अच्छी हालत में रहो।"

बीसवाँ उपाय

हे बीमार लोगों, तुम जो अपनी बीमारियों के लिए इलाज खोज रहे हो!
बीमारी दो तरह की होती है। एक असली बीमारी है, दूसरी काल्पनिक बीमारी। असली बीमारी के लिए महामहिम ने अपनी धरती के विशाल औषधालय में हर बीमारी की दवाई रखी है। बीमारी के बिना उन दवाओं को कैसे जाना और उनका आनंद लिया जा सकता है? धर्म की मांग है कि इलाज में दवाइयों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए, लेकिन हमें यह जानना चाहिए कि उनका असर और इलाज सर्वशक्तिमान ईश्वर की ओर से है। वही इलाज देता है और वही दवाई भी देता है।

कुशल, ईश्वर-चेतन डॉक्टरों की सिफारिशों का पालन करना उपचार का एक महत्वपूर्ण रूप है। क्योंकि अधिकांश बीमारियाँ दुर्व्यवहार, संयम की कमी, अपव्यय, दुराचार, अपव्यय और उदासीनता और देखभाल की कमी से उत्पन्न होती हैं। एक ईश्वर-चेतन डॉक्टर निश्चित रूप से ऐसी सलाह और आदेश देगा जो इस्लामी उपदेशों के विपरीत न हों। वे दुर्व्यवहार और अपव्यय को मना करेंगे और सांत्वना देंगे। बीमार व्यक्ति को उनकी सिफारिशों और सांत्वना पर भरोसा होता है, और बीमारी कम हो जाती है, जिससे परेशानी की जगह राहत का एहसास होता है।

लेकिन जब बात काल्पनिक बीमारियों की आती है, तो सबसे कारगर दवा यही है कि उन्हें महत्व न दिया जाए। जितना महत्व दिया जाता है, उतना ही वे बढ़ती और फूलती हैं। अगर महत्व न दिया जाए, तो बीमारी कम हो जाती है और मिट जाती है। मधुमक्खियों को जितना परेशान किया जाता है, उतना ही वे व्यक्ति के सिर के चारों ओर झुंड बनाकर घूमती हैं, जबकि अगर उन पर ध्यान न दिया जाए, तो वे तितर-बितर हो जाती हैं। साथ ही, अंधेरे में अपनी आंखों के सामने लहराते धागे पर जितना ध्यान दिया जाता है, उतना ही वह व्यक्ति को परेशान करता है और उसे पागलों की तरह भागने पर मजबूर करता है।

यदि आप इस पर ध्यान नहीं देंगे, तो आप देखेंगे कि यह साँप नहीं, बल्कि एक साधारण रस्सी का टुकड़ा है, और आप अपने डर और चिंता पर हंसेंगे।

अगर किसी व्यक्ति की सेहत को लेकर बेबुनियाद चिंता लंबे समय तक बनी रहे, तो वह हकीकत में बदल जाती है। यह उन लोगों के लिए एक बुरी बीमारी है जो नर्वस हैं और जो बेबुनियाद डर और चिंता में डूबे रहते हैं; ऐसे लोग पहाड़ बना देते हैं

एक छोटी सी बात पर भी उनका मनोबल टूट जाता है। खास तौर पर, अगर उनका सामना निर्दयी और अनुचित "आधे" डॉक्टरों से होता है, तो उनकी चिंताएँ बढ़ जाती हैं और बढ़ जाती हैं। अगर वे अमीर हैं, तो वे अपनी संपत्ति खो देते हैं, या फिर वे अपनी बुद्धि या स्वास्थ्य खो देते हैं।

इक्कीसवाँ उपाय

हे विश्वासी भाई या बहन, जो बीमार हैं! आप अपनी बीमारी के कारण शारीरिक पीड़ा झेल रहे हैं, लेकिन एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक आनंद जो आपके शारीरिक दर्द के प्रभाव को दूर कर देगा, आपको घेरे हुए है। क्योंकि यदि आपके पास पिता, माता या रिश्तेदार हैं, तो आपके प्रति उनकी सबसे सुखद करुणा, जिसे आप लंबे समय से भूल चुके हैं, जागृत हो जाएगी और आप फिर से उनकी दयालु निगाहें देखेंगे जो आपको बचपन में मिली थीं। इसके अलावा, आपके आस-पास के दोस्त जो परदे और छिपे हुए रह गए थे, वे बीमारी के आकर्षण के माध्यम से फिर से आपकी ओर प्यार से देखेंगे। इनके सामने, आपका शारीरिक दर्द नगण्य है। साथ ही, जिनकी आप गर्व से सेवा करते हैं और जिनसे आप प्रशंसा प्राप्त करने की कोशिश करते हैं, वे अब आपकी बीमारी के कारण आपकी दयालुता से सेवा करते हैं, और इस प्रकार आप अपने स्वामियों के स्वामी बन गए हैं। इसके अलावा, चूंकि आपने लोगों की सहानुभूति और मानवीय कोमलता को अपनी ओर आकर्षित किया है, इसलिए आपको कई मददगार दोस्त और दयालु साथी मिले हैं जो बदले में कुछ भी नहीं चाहते हैं।

फिर से, आपको अपनी बीमारी से आदेश मिला है

बहुत से थकाऊ कामों से आराम करने के लिए, और आप आराम कर रहे हैं। निश्चित रूप से, इन आध्यात्मिक सुखों के सामने, आपका छोटा-मोटा दर्द आपको शिकायत करने के लिए नहीं, बल्कि धन्यवाद देने के लिए प्रेरित करेगा।

बाईसवाँ उपाय

आप, विश्वास में भाई या बहन , जो पक्षाघात जैसी गंभीर बीमारी से पीड़ित हैं! सबसे पहले, मैं आपको खुशखबरी देता हूं कि विश्वासियों के लिए पक्षाघात को धन्य माना जाता है। मैंने यह बात बहुत पहले से ही संत लोगों से सुनी है, लेकिन मुझे इसका कारण नहीं पता था। अब, मुझे एक कारण इस प्रकार समझ में आता है:

सर्वशक्तिमान परमेश्वर की स्वीकृति और प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए, तथा इस संसार द्वारा आध्यात्मिक जीवन के लिए उत्पन्न किए गए बड़े खतरों से बचने के लिए, तथा शाश्वत सुख प्राप्त करने के लिए, परमेश्वर के लोगों ने दो सिद्धांतों का पालन करना चुना है:

पहला है मृत्यु का चिंतन। संसार को क्षणभंगुर मानकर यह समझना कि वे भी संसार में क्षणभंगुर मेहमान हैं और उनके भी कई कर्तव्य हैं, वे इस तरह से शाश्वत जीवन के लिए काम करते हैं।

दूसरा: शारीरिक, दुष्ट आत्मा और अंध वासनाओं के खतरों से बचने के लिए, उन्होंने तपस्या, धार्मिक अभ्यास और तप के माध्यम से दुष्ट आत्मा को मारने की कोशिश की है।

और आप, मेरे भाई या बहन, जिन्होंने अपने शरीर का आधा हिस्सा खो दिया है! ऐसा करने का चुनाव किए बिना,

तुम्हें ये दो सिद्धांत दिए गए हैं, जो सुख के कारण हैं, ताकि तुम्हारा शरीर तुम्हें संसार की क्षणभंगुर प्रकृति के विरुद्ध निरंतर सचेत करे और तुम्हें याद दिलाए कि मनुष्य नश्वर है। संसार तुम्हें अब और नहीं डुबा सकता, न ही प्रमाद तुम्हारी आँखें बंद कर सकता है। और निश्चय ही, शारीरिक, दुष्ट-आज्ञाकारी आत्मा किसी व्यक्ति को आधी मानव अवस्था में नीच वासनाओं और पशु-इच्छाओं से धोखा नहीं दे सकती; वह व्यक्ति दुष्ट-आज्ञाकारी आत्मा के परीक्षणों से शीघ्र ही बच जाता है।

इस प्रकार, ईश्वर में विश्वास और समर्पण तथा उस पर निर्भरता के माध्यम से, एक आस्तिक पक्षाघात जैसी गंभीर बीमारी से थोड़े समय में लाभ उठा सकता है, बजाय संतों की तरह गंभीर परीक्षणों से गुजरने के। इस प्रकार एक गंभीर बीमारी इन लाभों के लिए एक बहुत ही मामूली विनिमय बन जाती है।

तेईसवाँ उपाय

तुम जो बीमार और दुखी हो, अकेले और अजनबी हो!
जबकि तुम्हारा एकाकीपन और निर्वासन, तुम्हारी अस्वस्थता के साथ मिलकर कठोरतम हृदयों में सहानुभूति जगाते हैं तथा तुम्हारे प्रति दया और करुणा को आकर्षित करते हैं, निश्चय ही वे तुम्हारे प्रति दयालु सृष्टिकर्ता की करुणा को भी आकर्षित करेंगे, जो निश्चित रूप से अन्य सभी चीजों की सहानुभूति और करुणा का स्थानापन्न होगी।

वही है जो कुरान के सभी सूरों में से एक को छोड़कर बाकी सभी के आरंभ में स्वयं को हमारे सामने "अत्यंत दयालु और दयावान" के गुणों के साथ प्रस्तुत करता है।

अपनी करुणा की एक झलक से, वह सभी माताओं को अपने बच्चों को अद्भुत कोमलता से पालने के लिए प्रेरित करता है, और हर वसंत में अपनी दया की एक अभिव्यक्ति के माध्यम से, वह पृथ्वी के चेहरे को उपहारों से भर देता है। इसके अलावा, अपने सभी आश्चर्यों के साथ, स्वर्ग, जो शाश्वत खुशी का निवास है, उसकी दया की एक ही अभिव्यक्ति का गठन करता है। इस प्रकार, विश्वास के माध्यम से उसके साथ आपका संबंध, उसकी आपकी पहचान और अपनी बीमारी में पाई जाने वाली असहायता की आवाज़ के माध्यम से उससे विनती करना, और निर्वासन में आपका अकेलापन निश्चित रूप से उसकी दया को आपकी ओर आकर्षित करेगा।

चूँकि वह मौजूद है और वह आपकी ओर देखता है, इसलिए सब कुछ आपके लिए मौजूद है। जो लोग वास्तव में अकेले हैं और निर्वासित हैं, वे वे लोग हैं जिनका विश्वास और समर्पण के माध्यम से उससे कोई संबंध नहीं है, या जो उस संबंध को कोई महत्व नहीं देते हैं।

चौबीसवाँ उपाय

तुम जो मासूम बीमार बच्चों या मासूम बच्चों जैसे बुज़ुर्गों की देखभाल करते हो! तुम्हारे सामने आख़िरत के लिए एक अहम चीज़ है। इन कामों को जोश और मेहनत से अंजाम दो! मासूम बच्चों की बीमारियों में उनके सांसारिक जीवन से जुड़ी कई समझदारी भरी बातें छिपी हैं। जैसे, उनकी बीमारियाँ उनके नाज़ुक शरीरों के लिए कसरत और अभ्यास की तरह हैं, और भगवान का टीका और प्रशिक्षण है, ताकि वे उथल-पुथल और उथल-पुथल का सामना करने में सक्षम हो सकें

भविष्य में दुनिया में होने वाली उथल-पुथल के बारे में। जैसा कि विद्वानों द्वारा स्वीकार किया गया है, वयस्कों के पापों के प्रायश्चित की तरह, मासूम बच्चों की बीमारियाँ भी टीका हैं-

ऐसी बीमारियाँ जो भविष्य में या परलोक में उनके आध्यात्मिक जीवन, उनकी आध्यात्मिक शुद्धि और विकास में सहायक होंगी। इसके अलावा, ऐसी बीमारियों से होने वाले पुण्य माता-पिता के अच्छे कर्मों की नोटबुक में दर्ज किए जाते हैं, और विशेष रूप से उस माँ के, जो करुणा के कारण अपने बच्चे के स्वास्थ्य को अपने से ज़्यादा प्राथमिकता देती है।

जहाँ तक बुज़ुर्गों की देखभाल का सवाल है, हमारे नबी (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) से यह बात बिल्कुल सटीक रूप से वर्णित है, और कई ऐतिहासिक घटनाओं से यह बात साबित हुई है कि बुज़ुर्गों की दुआएँ, ख़ास तौर पर माता-पिता की दुआएँ स्वीकार करना, उनके दिलों को खुश करना और उनकी ईमानदारी से सेवा करना, इस दुनिया और आख़िरत में खुशी का ज़रिया है।11 और ऐसे कई अनुभव हैं जो यह स्थापित करते हैं कि जो बच्चा अपने बुज़ुर्ग माता-पिता की आज्ञा का पूरी तरह से पालन करता है, उसे अपने बच्चों से भी वैसा ही व्यवहार मिलेगा, और जो बच्चा अपने माता-पिता को चोट पहुँचाता है, उसे न केवल आख़िरत में सज़ा मिलेगी, बल्कि इस दुनिया में भी कई आपदाओं का सामना करना पड़ेगा। न केवल बुज़ुर्ग रिश्तेदारों या मासूम बच्चों की देखभाल करना, बल्कि वसीयत की सेवा करना भी-

11 अल-बुखारी, "अदब" 1-6; मुस्लिम, "बीरर" 1-6, 9, 10; एट-तिर्मिधि, "दावत" 110. (ट्र.)

किसी भी बीमार विश्वासी व्यक्ति की सहायता करें, विशेषकर यदि उसे हमारी आवश्यकता हो—क्योंकि हमारे बीच सच्चा भाईचारा आ रहा है।

विश्वास से प्रेरित होना - मुसलमान होने की एक शर्त है।

पच्चीसवाँ उपाय

आप, भाई और बहन मुसलमान, जो बीमार हैं! यदि आप सबसे अधिक लाभकारी, वास्तव में सुखद और पवित्र दवा चाहते हैं, जो हर बीमारी का इलाज है, तो अपना विश्वास विकसित करें! यानी, पश्चाताप और अपने पापों के लिए भगवान से क्षमा मांगने और पांच दैनिक प्रार्थनाओं और पूजा के अन्य कर्तव्यों के माध्यम से, अपनी बीमारियों पर विश्वास लागू करें - वह पवित्र इलाज है - और दवा

यह प्रदान करता है।

दरअसल, इस दुनिया के प्रति प्रेम और उससे लगाव के कारण ऐसा लगता है कि सांसारिक लोगों का दुनिया जितना ही बड़ा बीमार सांसारिक अस्तित्व है। हमने रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में यह स्पष्ट रूप से समझाया है कि ईमान उस बीमार अस्तित्व को तुरंत ठीक कर देता है, जो दुनिया की तरह ही मौत और अलगाव के प्रहारों के अधीन है और घावों और चोटों से "छिद्रित" है। मैं आपको थकाए बिना चर्चा को यहीं समाप्त करता हूँ।

जहाँ तक ईमान की दवा का सवाल है, यह तब अपना असर दिखाती है जब आप अपने धार्मिक कर्तव्यों को यथासंभव पूरा करते हैं। असावधानी, व्यभिचार, शारीरिक इच्छाएँ और धार्मिक रूप से निषिद्ध मनोरंजन उस दवा के असर को रोकते हैं। चूँकि बीमारी असावधानी को दूर करती है, भूख को कम करती है और व्यक्ति को बीमार होने से बचाती है।

धार्मिक रूप से गैरकानूनी सुखों में भाग लेने से बचें, इसका लाभ उठाएँ। पश्चाताप, ईश्वर से क्षमा मांगने, प्रार्थना और विनती के माध्यम से सच्चे विश्वास की पवित्र औषधियों और रोशनी को लागू करें।

सर्वशक्तिमान ईश्वर आपको स्वास्थ्य प्रदान करें और आपकी बीमारियों को आपके पापों का प्रायश्चित बना दें। आमीन।
आमीन। आमीन।

> वे कहते हैं: "सारी प्रशंसा और कृतज्ञता अल्लाह के लिए है, जिसने हमें इस ओर मार्ग दिखाया। यदि अल्लाह ने हमें मार्ग न दिखाया होता, तो हम निश्चित रूप से सीधा मार्ग न पा सकते। हमारे रब के रसूल सत्य लेकर आए थे।" (7:43)

> तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

> हे ईश्वर! हमारे स्वामी मुहम्मद साहब पर कृपा कर, जो दिलों की दवा और उनका इलाज हैं, शरीरों की अच्छी सेहत और उनकी चिकित्सा, आँखों की रोशनी और उनकी रोशनी, तथा उनके परिवार और साथियों पर कृपा कर और उन्हें शांति प्रदान कर।

अनुक्रमणिका

ए

महत्वाकांक्षाएँ; सांसारिक, 29

बी

विश्वास, vii-viii, 11-13, 17-20, 34-35, 37-38; में और के अधीन ईश्वर, 34; औषधि, 37

अंधे, 19, 26, 33

इनाम, 26-27

सी

मोतियाबिंद, 18-19

कारण, vii, 4, 12, 17, 21, 27, 30, 34

निश्चितता, 12

प्रसव, 21

सभ्यता, vii

साथी; पैगम्बर के, 38

शिकायतें, 14, 28, 29; बीमारी को और बदतर बनाना, 27

भरोसा; परमेश्वर की दया पर,18

सांत्वना, 1, 22, 31

संतोष, 9, 14

डी

मृत्यु, 3-4, 8, 11-13, 17-19, 21, 33, 37; चिंतन, 33; भय, 12-13; घड़ी, 12; इस जीवन के कर्तव्यों की कठिनाई से मुक्ति के रूप में, 12; पुनर्मिलन के साधन के रूप में, 12 अपव्यय, 18, 28, 31, 37

दिव्य नाम (ईश्वर के सुन्दर नाम और गुण); सर्व-सुन्दर, 27, 28; दयालु, 6, 13, 14, 20, 21, 34-35; दयालु, 27; चंगा करनेवाला सर्वज्ञ, 5; सर्वज्ञ, 38; सर्वज्ञ, राजसी, 5; दयालु, 21, 35; सर्वज्ञ, 10, 25, 30, 38; सर्वज्ञ, 10, 30; सर्व-गौरव-फाइड, 38; सभी रोगी, 15; सभी-शक्तिशाली,11; सर्व-प्रदाता, 5; दया, 14; सदा प्रार्थनीय-सभी में से, 27, 28

और

आसानी और स्वास्थ्य; जीवन को आसान बनाना मंगल, 29

अस्तित्व, 15, 27-30, 37

प्रायश्चित; पापों के लिए, 10, 23

विलुप्ति, 11; शाश्वत, 11

एफ

क्षमा, 37-38; पापों के लिए परमेश्वर से क्षमा मांगना, 37

एच

स्वास्थ्य; निराधार चिंता, 31

असावधानी, 2, 4, 6, 11, 17-18, 34, 38; परदा, 11

इसके बाद, 4, 6-7, 9-11, 17-18, 24, 35-36

लाचारी; ईश्वर से आवाज़ के ज़रिए विनती करना, 35

मैं

बीमारी, 2-18, 20-21, 23-25, 27, 30-35, 37-38; असावधानी दूर करना, 17; बीमार शरीर की, 11; एक प्रकार की उपासना के रूप में, 24;

प्रार्थना का अवसर या कारण, 24; शारीरिक,11, 13-14; अप्राकृतिक, 13; बीमारी के समय, 15; परदा, 6

नपुंसकता; जन्मजात, 2, 9, 11, 16, 22, 24

जे

अय्यूब (पैगम्बर), 20

एल

जीवन, आठ, 2- 4, 7, 11-13, 17-18, 22, 24-25, 28-30, 33, 35-36; सुख, 28; पूंजी, 4; मूल्य, 28-29

प्रेम, vii, 8, 21, 32, 37; संसार का, 21

एम

चिकित्सा, 1, 31, 37-38

संदेशवाहक; ईश्वर का; अहमद, 3, 16; मुस्तफा, 17 मनोबल, 32

वृद्धावस्था, 19

पी

पैराडाइज़, 13, 19-20, 35

पक्षाघात, 33-34

धीरज, 4, 6, 15-16, 20-21, 27; परमेश्वर पर पूरी तरह भरोसा रखते हुए धीरज दिखाना, 16

दृढ़ता, 2-3; कृतज्ञता के साथ दृढ़ता दिखाना, 3

दर्शन, vii-viii

धर्मपरायणता और धार्मिकता, 18

आनंद; अवैध, 8; आध्यात्मिक, 33

प्रार्थनाएँ; प्रार्थनाओं की स्वीकार्यता

बीमारों की संख्या 24

आर

भरोसा; परमेश्वर पर, 16, 18

धार्मिक अभ्यास, 33

पश्चाताप, 37-38

सम्मान, 18, 22, 24, 28

पुनरुत्थान, viii

पुनर्मिलन, 12

एस

इलेमा गांव की साबरी, 17

संत, 3, 20-21, 34

बीमारी, 2, 10, 27; आध्यात्मिक, 27

सच्ची प्रार्थना, 2, 16; ईमानदारी, 17, 25

पाप, 10-11, 18, 23, 29, 36-38

आत्मा; दुष्ट-आज्ञा, 22, 33-34; दुष्ट-आज्ञा का परीक्षण, 34

परमेश्वर की पर्याप्तता, v-vi, 70-71, 73, 75-77

टी

उपचार, 30-31, 36

वी

इस्लामकोय से वज़ीरज़ादे मुस्तफ़ा, 17

मुलाकात; सांत्वना, 22

में

कमज़ोरी, 2, 11, 16, 25

बुद्धि; मानवता के निर्माण में, 16

दुनिया; परीक्षणों के क्षेत्र के रूप में, 12

आराधना, आठवीं, 2-3, 9, 12, 15-17, 21, 23-24, 37; दो प्रकार, 2

घाव; आध्यात्मिक, 11

और

जवानी; नशा, 6, 18